वामदेवो गौतमः। अग्निः। त्रिष्टुप्

भद्रं ते अग्ने सहसिन्ननीकमुपाक आ रोचते सूर्यस्य।
रुशद्दृशे ददृशे नक्तया चिदरूक्षितं दृश आ रूपे अन्नम्॥ ४.०११.०१

सहसिन्- बलवन्। अग्ने। ते- तव। भद्रम्- कल्याणम्। अनीकम्- तेजः। सूर्यस्य- सवितुः। उपाके- निकटे। आ रोचते- भासते। नक्तया- रात्रावपि। रुशद्दृशे- ज्वलद्दृष्टियुक्ताय। ददृशे- दृश्यते। दृशे- दर्शनाय। अरूक्षितम्- स्निग्धः। अन्नम्- सोमः। रूपे- भवद्रूपे। आ- आभिमुख्येन समर्पितः ॥१॥

वि षाह्यग्ने गृणते मनीषां खं वेपसा तुविजात स्तवानः।
विश्वेभिर्यद्वावनः शुक्र देवैस्तन्नो रास्व सुमहो भूरि मन्म॥ ४.०११.०२

तुविजात- बहुधा जात। अग्ने। मनीषाम्- भवन्मतिम्। गृणते- स्तुवते। स्तवानः- स्तुतः सन्। वेपसा- शुभकर्मणा। खम्- आनन्दम्। वि साहि- विमुञ्च। शुक्र- शुभ्र। विश्वेभिः- सर्वैः। देवैः। ववनः- समभाजयः। सुमहः- सुष्ठु महत्। भूरि- प्रभूतम्। तत्। मन्म- ध्यानम्। रास्व- प्रयच्छ ॥२॥

त्वदग्ने काव्या त्वन्मनीषास्त्वदुक्था जायन्ते राध्यानि।
त्वदेति द्रविणं वीरपेशा इत्थाधिये दाशुषे मर्त्याय॥ ४.०११.०३

इत्थाधिये- इदमित्थमिति निर्णीतबुद्धियुक्ताय। दाशुषे- दात्रे। मर्त्याय- मनुष्याय। अग्ने। त्वत्- त्वत्तः। काव्या- दर्शनानि जायन्ते। त्वत्- त्वत्तः। मनीषा जायन्ते। त्वत्- त्वत्तः। उक्था- मन्त्राः। जायन्ते। राध्यानि- सिद्धयो जायन्ते। वीरपेशाः- वीर्यरूपम्। द्रविणम्। त्वत्- त्वत्तः। एति- आगच्छति ॥३॥

Dr. Rangaji

WEBOLIM

त्वद्वाजी वाजम्भरो विहाया अभिष्टिकृज्जायते सत्यशुष्मः।

त्वद्रयिर्देवजूतो मयोभुस्त्वदाशुर्जूजुवाँ अग्ने अर्वा॥ ४.०११.०४

त्वत्- त्वत्तः। वाजी- बली। वाजंभरः- हव्यभरणशीलः। विहायाः- महान्। अभिष्टिकृत्- एषणापूरकः। सत्यशुष्मः- अवितथबलः पुत्रः। जायते। त्वत्- त्वत्तः। देवजूतः- देवप्रेरितः। मयोभुः- आनन्दकरः। रयिः। अग्ने। त्वत्- त्वत्तः। आशुः- क्षिप्रः। जुजुवान्- वेगगामी। अर्वा- अश्वः प्राणो भवति ॥४॥

त्वामग्ने प्रथमं देवयन्तो देवं मर्ता अमृत मन्द्रजिह्वम्।

द्वेषोयुतमा विवासन्ति धीभिर्दमूनसं गृहपतिममूरम्॥ ४.०११.०५

अमृत। अग्ने। प्रथमम्- अग्र्यम्। देवम्- द्योतनशीलम्। मन्द्रजिह्वम्- आनन्दकरवाचम्। द्वेषोयुतम्- द्वेषभावनापृथक्करम्। दमूनसम्- दान्तं दानमानसम्। गृहपतिम्- कुटुम्बपालकम्। अमूरम्- विदुषम्। त्वाम्। देवयन्तः- दैवीसम्पत्कामाः। मर्ताः- मर्त्याः। धीभिः- चित्तधारणाभिः। विवासन्ति- परिचरन्ति ॥५॥

आरे अस्मदमतिमारे अंह आरे विश्वां दुर्मतिं यन्निपासि।

दोषा शिवः सहसः सूनो अग्ने यं देव आ चित्सचसे स्वस्ति॥ ४.०११.०६

सहसः सूनो- शक्तिज। अग्ने। देवः- द्योतनशीलः सन्। शिवः- भद्रः सन्। दोषा- रात्रावपि। यम्। स्वस्ति- मङ्गळाय। सचसे- सेवसे। यत्- यस्मात्। निपासि- पालयसि तस्मात्। अस्मत्- अस्मत्तः। अमतिम्- मौढ्यम्। आरे- दूरं कुरु। अंहः- अघम्। आरे- दूरं कुरु। विश्वाम्- सर्वाम्। दुर्मतिम्। आरे- दूरे कुरु ॥६॥

Dr. Rangaji

WEBOLIM